IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 5.731

Volume 8, Issue 1, August 2021

ykd ç'kklu e uSfrd ekuoh; eY; rFkk nkf;Rock/k

M,- tkon v[rj

सहायक प्रोफेसर

राजकीय महाविद्यालय अतरौली, अलीगढ़।

lkjka'k *केवल मानव प्रजाति में जन्म लेने मात्र से ही कोई व्यक्ति वास्तव में मानव कहलाने का अधिकारी नहीं बन जाता। उसे पूर्णरूप से और सही अर्थों में मानव बनाना पड़ता है। मानव निर्माण का यह कार्य सांस्कृतिक विकास का सर्वप्रथम अंग है। इस प्रक्रिया में व्यक्ति अपने समाज द्वारा पूर्व–अर्जित ज्ञान से, रीति–रिवाजों से, मूल्य–मान्यताओं से, व्यवहार के मान्य तौर–तरीकों से और जीवनादर्शों से परिचित होता है। जीवन निर्वाह के ज्ञान–कौशल सीखता है। इसी क्रम में उसकी जीवनदृष्टि और विश्वदृष्टि भी विकसित होती है, उसका सौंदर्य–बोध और उसके सुरुचि–संस्कार विकसित होते हैं। सांस्कृतिक विकास के उच्चतर स्तर पर व्यक्ति की आंतरिकता का परिष्कार होता है। सामान्य मानवीय दुर्गुणों और दुष्प्रवृत्तियों से मुक्त होकर वह चारित्रिक सद्गुणों से सुसज्जित होता है। सदाचरण की मर्यादाओं से परिचित होता है तथा नैतिक और मानवीय मूल्यों के प्रति निष्ठावान बनता है। ये सद्गुण और मूल्य व्यक्ति को मानवीय गरिमा प्रदान करते हैं। उसे सभ्य और सुसंस्कृत व्यक्ति बनाते हैं। सभी विकसित संस्कृतियों ने, विशेषतः हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति ने, ऐसे मूल्यनिष्ठ मानव निर्माण पर गंभीर मनन–चिंतन किया है। इसके विपरीत आज की अर्थप्रधान, व्यक्तिवादी तथा उपभोक्तावादी औद्योगिक सभ्यता में नैतिक और मानवीय मूल्यों के प्रति प्रायः उपेक्षा का भाव है। फलतः आधुनिक युग में मूल्यनिष्ठ व्यक्तियों का अभाव एक बड़ी युगपीड़ा बन गई है।*

e[;'kCn लोक प्रशासन में नैतिक मानवीय मूल्य तथा दायित्वबोध